ont>

**12.05 hrs.**

## CALLING ATTENTION TO MATTER OF URGENT PUBLIC IMPORTANCE

### Loss caused to the farmers of Gujarat due to failure of the crops

Title: Regarding attention called by Shri Madhusudan Mistry, of the Minister of Science and Technology to the situation arising out of the loss caused to the farmers of Guajrat due to failure of the crops of Bt. Cotton Bollguard MECH-162 and MECH-12 varieties of seeds produced and marketed by Mahyco Monosanto Company India Limited and steps taken by the Government in regard thereto.

SHRI MADHUSUDAN MISTRY (SABARKANTHA): Sir, I call the attention of the Minister of Science and Technology to the following matter of urgent public importance and request that he may make a statement thereon:

> "The situation arising out of the loss caused to the farmers of Gujarat due to failure of the crops of Bt. Cotton Bollguard MECH-162 and MECH-12 varieties of seeds produced and marketed by Mahyco Monsanto Company India Limited and steps taken by the Government in regard thereto."

**मानव संसाधन विकास मंत्री, विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्री तथा महासागर विकास मंत्री (डॉ. मुरली मनोहर जोशी):** अध्यक्ष महोदय, बी टी ( बैसिलस थुरिनजिएंसिस) कपास संकरों की जो तीन किस्में, मैक-162 बी टी, मैक-12 बी टी तथा मैक-184 बी टी रिलीज की गई थी, उन्हें वर्ा 2003 के मई तथा जून के महीने में गुजरात के कपास की खेती करने वाले जिलों में बेचा गया था। निपादन-क्षमता की दृटि से उक्त सभी तीनों संकर किस्में उस क्षेत्र में किसानों द्वारा उगाई गयी पारम्परिक कपास संकर किस्मों की तुलना में उत्कृट पायी गयी।

**अध्यक्ष महोदय** : माननीय मंत्री जी, माननीय सदस्य कह रहे हैं कि उन्होंने आपका यह उत्तर पढ़ लिया है। इसलिए वे प्रश्न पूछना चाहते हैं। यदि आपकी अनुमति हो, तो मैं उन्हें सीधे प्रश्न पूछने की अनुमति प्रदान करूं ?

**डॉ. मुरली मनोहर जोशी :** जी हां। मुझे कोई आपत्ति नहीं है।

*बी टी कपास संकर किस्मों के मामले में बॉलवॉर्म को नियंत्रित करने के लिए कम स्प्रे की आवश्यकता हुई और पारम्परिक कपास संकर किस्मों के मुकाबले सइमें ज्यादा पैदावार हुई। ये संकर फसलें शीघ्र ही पक जाती हैं इसलिए रबी मौसम में किसानों को गेहूं की दूसरी फसल की बिजाई करने का अवसर मिल जाता है, जिससे उन्हें अतिरिक्त लाभ प्राप्त करने में सहायता मिल सकती है।

उक्त तीन संकर किस्मों में से मैक-12 बी टी संकर की निपादन-क्षमता सबसे अच्छी रही। इससे बहुत अधिक पैदावार हुई, जिसके डोडों का आकार बड़ा था और उनका रेशा भी लम्बा था। इस संकर किस्म के कपास से उस क्षेत्र में उगाई जाने वाली पारम्परिक कपास की संकर किस्मों से 200 रू0 प्रति क्विंटल अधिक दाम मिल रहा है। मैक-184 बी टी कपास संकर की निपादन-क्षमता बाजार में अच्छी है। इसके बॉल्स (डोडे) बड़े तथा रेशे लंबे हैं, जिसकी मांग बाजार में ज्यादा है। इस संकर की निपादन-क्षमता गहन प्रबंधन परिस्थितियों में सर्वाधिक है। बी टी कपास बीजों के सभी प्रयोगकर्ताओं को यह जानकारी उपलब्ध करा दी गयी है ताकि वे इस संकर का इटतम प्रयोग कर उत्कृट परिणाम प्राप्त कर सकें।

मैक-162 बी टी कपास संकर किस्म एक मध्यम दर्जे की संकर किस्म है जो वर्ा क्षेत्र में उगाने के लिए उपयुक्त है1 इस संकर किस्म में मैक-12 तथा मैक-184 बी टी कपास संकरों की तुलना में डोडे का आकार अपेक्षाकृत छोटा होता है। तथापि, प्रत्येक पादप में डोडों की संख्या एवं पादप की नवीनीकरण क्षमता इसे पैदावार संबंधी मापदंडों के संदर्भ में अन्य बी टी संकरों के मुकाबले खड़ा कर देती है। इस संकर किस्म की निपादन-क्षमता गुजरात के पिछले तथा चालू मौसम में औसत से ज्यादा थी। पुपण-मौसम के दौरान बी टी कपास के उत्कृट निपादन प्राप्त करने के लिए किसानों को सप्ताह में दो बार लेपिडोप्टेरॉन कीट लार्वा काउंटों का उपयोग करने की सलाह दी गयी थी ताकि आवश्यकता के अनुसार कीटनाशकों के छिड़काव के लिए किफायती प्रारंभिक स्तर ( इ टी एल) का निर्धारण किया जा सके।

माननीय संसद सदस्य श्री मधुसूदन मिस्त्री के अनुरोध पर चालू मौसम में बी टी कपास की फसल की निपादन क्षमता का अध्ययन करने के उद्देश्य से विज्ञान एवं प्र ौद्योगिकी मंत्रालय के बायोटैक्नोलॉजी विभाग ने विशेाज्ञों के एक दल को गुजरात में जिला साबरकांठा के लक्ष्मीपुरा गांव के दौरे पर भेजा, जिसमें नई दिल्ली तथा गुजरात कृाि विश्वविद्यालय, आनन्द से कृाि वैज्ञानिक और केन्द्रीय एवं राज्य सरकार के अधिकारी शामिल थे। इस दल ने 11 नवम्बर, 2003 को लक्ष्मीपुरा का दौरा किया। दल ने दौरे से पहले तथा बाद में माननीय संसद सदस्य से भेंट भी की ताकि उस क्षेत्र में बी टी कपास संकर की निपादन क्षमता के बारे में उन्हें जानकारी दी जा सके।

(माननीय संसद सदस्य के पत्र में उल्लिखित 58 भूखंडों की सूची से) दल द्वारा सरसरी तौर पर दौरे किए गए 5 भूखंडों में से 4 भूखंडों की फसल स्थिति बहुत अच्छी से उत्कृट तक पाई गयी जबकि एक खंड में फसल की स्थिति इतनी अच्छी नहीं थी पर औसत तक थी। इन भूखंडों में कपास की पैदावार गैर-बी टी कपास की औसत पैदावार से कहीं अधिक होगी। दल की राय है कि जिन किसानों ने अपनी फसलों का प्रबंधन संस्तुत की गई कृाि प्रक्रियाओं के अनुसार किया है, वे इस वर्ा कपास की उच्च उपज प्राप्त करेंगे। बी टी कपास संकरों की खेती करते समय किसानों द्वारा अपनाई जाने वाली कृाि प्रक्रियाओं के बारे में दिए गए दिशा-निर्देशों का साहित्य स्थानीय भााा में उपलब्ध कराया था। फसल की सफलता या असफलता के लिए यह बात महत्वपूर्ण है कि कपास की फसल का प्रबंधन ऐसी प्रक्रियाओं के अनुसार किया गया है कि नहीं। इन पांचों भूखंडों में से सरसरी तौर पर चुने गए पादपों के डोडों और क्षतिग्रस्त बॉल्स की संख्या संबंधी इकट्ठे किए गए आंकड़े यह दर्शाते हैं कि बी टी जीन कपास फसलों में लेपीडोप्टेरॉन कीट उत्पीड़न को रोकने में समर्थ हैं। यह बात ध्यान देने योग्य है कि बी टी टैक्नोलॉजी (क्राई 1 ए सी जीन) कपास की उस पृठभूमि की आनुवांशिक क्षमता को प्रभावित नहीं करती है, जिस पृठभूमि में इसे उत्प्रेरित किया जाता है। बी टी कपास संकर किस्मों की निपादन क्षमता कृाि-जलवायु परिस्थितियों, संकरों के जीनोटाइप तथा फसल के प्रबंधन पर भी निर्भर करती है।

मैसर्ज महाराट्र हाइब्रिड सीड कम्पनी लिमिटेड ( महाइको) मुम्बई द्वारा, अनुवांशिक इंजीनियरिंग अनुमोदन समिति ( जी ई ए सी) को प्रस्तुत की गई वर्ा 2002-03 के लिए बी टी कपास की निपादन क्षमता रिपोर्ट में यह निर्का निकाला गया कि आमतौर पर उगाई गई गैर-बी टी संकर किस्मों की तुलना में बी टी कपास का निपादन सामान्यतः संतोाजनक था तथा उसकी पैदावार बेहतर थी। वर्ा 2003-04 में राज्य की बी टी कपास संबंधी निपादन रिपोर्ट का भी इसी प्रकार का निर्का है। इसके अला

वा, महाइको द्वारा यह भी योजना बनायी गयी है कि भविय के रोपण मौसमों के लिए बी टी कपास फसलों के बेहतर प्रबंधन हेतु किसानों को शिक्षित करने के उद्देश्य से उन्हें गहन प्रशिक्षण दिया जायेगा, क्योंकि यह एक नयी प्रौद्योगिकी है।

स्थानीय समाचार पत्रों ने यह रिपोर्ट दी है कि इस वर्ा में बिजाई की गई बी टी कपास के परिणाम से साबरकांठा जिले के किसान अधिकतर खुश हैं।

SHRI MADHUSUDAN MISTRY : Sir, I have read the answer given by the Minister. I apprehended that I would get the same type of answer. I am not satisfied at all with the answer. I do not know why the Government is hell bent on giving benefit to a multinational company when the farmers are meeting heavy losses, especially in Gujarat, by purchasing the seeds of this company. Let me come to the facts of the Motion.

In Gujarat, more than 100 thousand acres of land has come under the cultivation of the Bollguard variety BT cotton MECH-162 and MECH-12. The claim of the company was that Bollguard variety of BT cotton fights the pest at its very germination, that it does not allow it to grow, that it does not allow it to attack the balls of the cotton, and that the farmers will yield a very good crop. The company claimed that the yield per acre would be at least from 18 quintals to 20 quintals of cotton. It was also claimed that the farmer would not need to spend much money on the pesticides as a result of which the farmer would save good amount of money. It was also stated that because the yield is more, the benefit to the farmers would be much greater.

Farmers in the whole of Gujarat, and especially in my area, realised as early as in August that the pest has attacked the very cotton flowers not once but many times in a span of almost 30 days to 40 days as the cotton balls grew bigger and bigger. The pest was not killed in the seed itself as the company claimed. The claim of the company that the plant itself fights the pink, green and mixed colour pest was proved to be false. The plant did not fight back this pest. In fact, it attacked the very balls and the flowers. There were many plants where there were hardly any flowers and cotton balls.

As early as August, the farmers wrote to the Government of Gujarat. They informed the company of it. In fact they informed this to the Director of Agriculture of the State Government of Gujarat. Farmers purchased these seeds based on the permission given by Government of India to this company, as also the leaflets printed and distributed by the Department of Agriculture of Government of Gujarat. Based on that permission and those leaflets they purchased these seeds.

When they found that the company's claim was literally wrong, they dismissed it thinking that in Gujarat the last three years had been bad because of severe drought. In the hope that since the fourth year was good they would get a bumper crop they will have good income, they have sown these cottonseeds.

No action was taken even after they have written to the Department of Agriculture of Government of India. The Agriculture Department of Government of Gujarat even went to the extent of saying that they had nothing to do with the permission because it was given by the Government of India, and that they were nowhere in the picture. I wrote to the Ministry of Agriculture, Ministry of Environment and Forests, and Ministry of Science and Technology.

Sir, I also wrote to the Standing Committee. The Committee gave its report. It was comprising some scientists.

MR. SPEAKER: Please be very brief.

SHRI MADHUSUDAN MISTRY : Sir, I am just making a very brief statement. It is a question of millions of the farmers in this country. It is not a small issue.

Sir, the Department of Bio Technology also comes under him. My question is that how the Genetic Engineering Approval Committee has given them the permission without making full field trials. They made the field trial on 60 farms only in this company. What is the basis of these experiments that were carried out? The experiments were carried out only in 60 farms. The Bio Technology Department gave permission to Mahyco Monsanto Company to sell the seeds in the entire country despite the fact that the experiments were not carried out in different regions where the climatic conditions differ, and where all other things differ. As a result, the farmer has made a loss.

Now, his Department says: "We are not responsible for the loss, we are not supposed to give you the compensation. You go to the consumer court and file a case against the company."

The GEAC comes under him and he is directly responsible for his approval. One of the Members in the Committee has raised objections. I must read out as to what he said. He is the person from the Ministry of External Affairs. He has said:

> "There may be some arrangements of funds from the company to meet any eventualities in the event of anything going wrong "

He has suggested that this could be one-time deposit or the share from the sale of the seeds for a limited period.

He has also raised the issue of non-tariff barrier which could be used to restrict the trade by importing countries. It is also needed for coordination and exchange of data with other countries growing BT cottons.

Now, the GEAC has given permission to this company on the following conditions: that it should provide the report every year; that it should, at least, inform the farmers about the productions of seeds; that the packet should also contain the detailed direction to use seeds including sowing about agro climate; that the data should be provided to the GEAC; that the monitoring and susceptibility of the BT cottons should also be undertaken by the agency identified by the Ministry of Environment and Forest. There are hosts of such conditions. But these conditions are being violated by the company.

Sir, I would like to know from the hon. Minister that what does he want to do with this company which has violated the very directions and conditions laid down by the GEAC. It is my demand that the Government should ask the Mahyco Monsanto Company to deposit the money in order to pay the compensation to all those farmers in the country who have made a loss.

Sir, this data is not made public. The field trial data of the Mahyco Monsanto Company, which has carried out the experiments on 60 farms in this country, is very strictly prohibited. It has not made it available to the public. It has not been debated in this country. They are not providing the data to the farmers.

MR. SPEAKER: Please conclude now.

SHRI MADHUSUDAN MISTRY : Sir, I am just concluding. Please give me two to three minutes more.

Sir, it was also stated that they should initiate an independent study. The very composition of the GEAC is in question. It consists of only officials. There is nobody there who is interested in studying the whole issue. So, I would like to know what the Government mechanism is to know how much seeds the company is producing.

Sir, the said company has a very limited capacity to produce these seeds. It makes me feel that the company is mixing spurious and duplicate seeds with these main seeds. As a result of it, the farmers are making loss in the whole country. There are such reports from the South India as well as from the Western India.

So, I would like to know from the hon. Minister as to what steps he is going to take so that the GEAC meetings and minutes are transparent and they are made public. Does he want them to pay compensation to the farmers who have made loss? If the compensations are not paid, I would be compelled to understand that there is something which goes on between the company and the Government.

On all these points, I would like to have the reply of the hon. Ministers Thank you.

डॉ. मुरली मनोहर जोशी श्रीमन्, सम्मानित सदस्य की ओर से हमारे यहां एक शिकायत प्राप्त हुई थी और उस शिकायत में उन्होंने अपने निर्वाचन क्षेत्र के लक्ष्मीपुरा इलाके के किसानों के बारे में यह बताया था कि उनके यहां इस बार इस कपास की खेती में, जिन्होंने इस बी.टी. कॉटन सीड को लगाया है, उन्हें कुछ नुकसान हुए हैं और वह सीड काम नहीं कर रहा है। इन्होंने 18.10.2003 को हमें चिट्ठी लिखी थी। इन्होंने स्टेंडिंग कमेटी के चेयरमैन को भी चिट्ठी लिखी थी, हमारे डिपार्टमेंट के अधिकारियों को भी इन्होंने चिच्ठी लिखी थी। हमने उसी समय तत्काल एक कमेटी वहां भेजी। उस कमेटी के सदस्यों के नाम मैं पढ़ रहा हूं

Dr. O.P. Govila, Prof. of Genetics (Retd), Division of Genetics, IARI, New Delhi, Dr. T.V. Ramanaiah, Scientist-F DBT, Government of India, Dr. R.C. Jhala, HOD, Deparity of Entomology, College of Agriculture, Anand, Dr. U.G. Patel, Senior Cotton Breeder, GAU, Surat, Dr. R.A. Sherasiya, Additional Director of Agricutlue, (Extn) Gandhinagar, Government of Gujarat, Mr. B.P. Sojitra, JDA (Seeds), Gandhinagar, Government of Gujarat, Shri R.K. Chaudhary, DDA (Extn.), Himatnagar, Government of Gujarat, Dr. D.B. Patel, Assitant Research Scientist (Cotton), Khedabrama, GAU, Gujarat, Mr. V.V. Patel, Assistant Director of Agriculture (Ex.), Ider, Sabarkantha, Government of Gujarat, Mr. N.V. Patel, Assistant Director of AgricutIrue (QC), Himatnagar, Government of Gujarat, Mr. H.M. Chvada, AO, Dist. Himatnagar, Government of Gujarat, Mr. D.R. Patel, Extension Officer, Khedabrama, Government of Gujarat, and Mr. U.M. Makavana, Extension Officer, Ider, Government of Gujarat.

इसमें आप देख रहे हैं कि सैण्ट्रल गवर्नमेंट का कोई अधिकारी नहीं हैâ€¦ (व्यवधान)सुनिये, मैंने आपकी बात सुनी, आप कृपा करके सुनिये। मिस्त्री जी, उत्तेजना से बात नहीं बनेगी। हम भी इसमें रुचि रखते हैंâ€¦ (व्यवधान) आप कृपा करके सुनिये, मैंने आपकी बात ध्यानपूर्वक सुनी है। मुझे भी किसानों के साथ उतनी ही हमदर्दी है। मैं भी इस मसले को जानता हूं। मुझे भी मालूम है, इसके अन्दर क्या करना है। कृपा करके जरा शान्ति से सुनिये। ऐसा नहीं है, आपकी चिट्ठी के बाद ये लोग वहां गये और किसानों से मिले। किसानों ने इनको केवल दो फील्ड्स दिखाये। कमेटी ने अपनी तरफ से तीन और फील्ड्स देखे, उनकी रिपोर्ट उन्होंने दी और उस रिपोर्ट के अन्दर जिस किसी भी बीज का, चाहे वह एक वैरायटी हो, चाहे दूसरी वैरायटी हो या तीसरी वैरायटी हो, सब का कम्पैरीजन उन्होंने अध्ययन करके रिपोर्ट दी कि किसमें क्या कमी है। किसानों से उन्होंने पूछा, अगर किसी किसान को जो स्प्रे करना था, वह समय पर नहीं किया होगा तो निश्चित रूप से यह बी.टी. कॉटन सीड में कठिनाई आयेगी, उसकी जो इंस्ट्रक्शंस हैं, वह गुजराती भाा में सब किसानों को दी गई हैं। हर पैकेट के साथ वे इंस्ट्रक्शंस हैं, वे इंस्ट्रक्शंस मेरे पास मौजूद हैं। अगर उसका ठीक से परिपालन नहीं करेंगे तो निश्चित ही कहीं न कहीं कठिनाई आ सकती है, लेकिन उसके बावजूद भी जो गुजरात गवर्नमेंट की रिपोर्ट है और गुजरात के अखबारों की भी रिपोर्ट है। यानी आपके गुजराती के जो अखबार कह रहे हैं, मैं उसे अंग्रेजी में सब को सुना देता हूं, मेरे पास मूल गुजराती में भी है, मैं वह पढ़कर सुना देता हूं। संदेश ने 21.11.2003 को यह लिखा है,

"Sabarkanta farmers happy with good BT production."

इसकी डिटेल्स आप पढ़ लीजिए। फिर संदेश 11 नवम्बर, 2003 को लिखता है :

"Farmers honoured by getting good yield in Bolghat."

He is a farmer, Kantibhai Jyotharam Patel of Prem Nagar, Botu Village of Mansa Taluka.

SHRI MADHUSUDAN MISTRY : Sir, I need your protection. What is this happening? I have also got the newspaper reports which say what has gone wrong with BT cotton. It is not the composition of the scientists or the people with Central Government which I am asking. This is a large scale problem in Gujarat. In other States what the Genetic Engineering Approval Committee has said about it. But why has the company not obeyed the conditions which are laid down by GEAC?

What has the Minister got to say on this point? It is not a local problem. What he is reading is a very small part of the noteâ€¦â€¦ (*Interruptions*) It is not the local problem. It is not the question of that at all. Sir, I would like to seek your protection.

**श्री शिवाजी माने (हिंगोली) :** किसानों का बड़ा भारी नुकसान हो रहा है। â€¦ (व्यवधान)वहां किसान तबाह हो रहा है। â€¦ (व्यवधान)सरकार इस तरह से जवाब नहीं दे सकती। â€¦ (व्यवधान)

**डॉ. मुरली मनोहर जोशी :** कृपया आप शांत रहिये। ...(व्यवधान)

MR. SPEAKER: The procedure laid down in the House is quite clear. The Member has raised the questions which he wanted to raise and the Minister is replying to his questions The Minister is expected to reply to the questions which are raised and if the Member is not satisfiedâ€¦.

...(*Interruptions*)

SHRI PRIYA RANJAN DASMUNSI (RAIGANJ): Sir, his question is very specific. It is about the recommendations of the Genetic Engineering Approval Committee in respect of his State and whether they have been complied with by the producers or notâ€¦(*Interruptions*) He is not getting a satisfactory reply. So, he should be protectedâ€¦...(*Interruptions*)

**श्री सुरेश रामराव जाधव (परभनी) :** बीटी कॉटन के नाम पर कम्पनी किसानों को लूट रही है। â€¦ (व्यवधान)

**डॉ. मुरली मनोहर जोशी :** हर साल इस बीटी कॉटन के बीज की सेल बढ़ी है। यह ठीक है, जैसा मिस्त्री जी ने कहा कि कहीं मिक्सचर हुआ है। गुजरात में अकेले पांच कम्पनियां पकड़ी गयी हैं जो नकली सीड बेचती हैं। यह एक अलग सवाल है। हम नकली बीज बेचने वालों पर सख्त कार्रवाई करेंगे। उस पर कोई रोक नहीं है। अगर कोई शिकायत आयेगी कि किसी कम्पनी ने नकली बीज बेचा है, हमने उन कम्पनियां का बीज बेचने का लाइसेंस भी कैंसिल कर दिया है। इसके अलावा हम और भी कड़ी कार्रवाई करेंगे। हमें जहां भी संदेह होगा कि नकली बीज बेचने वालों की तरफ से कोई बीज बेचा जा रहा है, तो उस पर पूरी कार्रवाई होगी।

आप देखें कि पहले मध्य प्रदेश में 32,161 पैकेट्स 2003-04 में बिके। गुजरात में 1,4401 पैकेट्स बिके। महाराट्र में 46,404 पैकेट्स बिके। आंध्र प्रदेश में 12,894 पैकेट्स बिके और 897 पैकेट्स कर्नाटक में बिके। â€¦ (व्यवधान)

**अध्यक्ष महोदय :** मंत्री जी, आप अपना उत्तर जारी रखिये।

...(व्यवधान)

**डॉ.मुरली मनोहर जोशी** : सवाल यह है कि बीज बढ़ रहे हैं, बिक रहे हैं। â€¦ (व्यवधान)कृपया आप सुनिये। â€¦ (व्यवधान)

**श्री शिवाजी माने :** मंत्री जी, आप कम्पनी के बारे में तो बता रहे हैं लेकिन किसानों को कोई कम्पेनसेशन देने का प्रयास सरकार कर रही है या नहीं ?

â€¦ (व्यवधान)

डॉ. मुरली मनोहर जोशी : किसानों का नुकसान अगर नकली बीज से हुआ है तो वह अलग सवाल है। उनका कोई नुकसान हुआ है, ऐसी कोई रिपोर्ट हमारे पास नहीं है। â€¦ (व्यवधान)

**श्री मधुसूदन मिस्त्री :** कम्पनी की वजह से उनको नुकसान हुआ है। â€¦ (व्यवधान)

**डॉ. मुरली मनोहर जोशी :** हम उसके बारे में जांच कर लेंगे कि कहीं कोई इस कारण से नुकसान हुआ है या नहीं। केवल आपके कहने से कुछ नहीं होगा। दूसरी बात यह है कि किसान को इंटेंसिव ट्रेनिंग देने की जरूरत है क्योंकि यह नयी प्रकार की वैरायटी है। उन्हें समझना पड़ेगा कि वह बीज कैसे बोया जाता

है, किस समय पर स्प्रे करना है या क्या इसके साथ रिफूजिया लगाने पड़ते हैं, इसको बिना समझे अगर कोई खेती करता है, उन इंस्ट्रक्शन्स को फालो किये बिना खेती करता है तो यह उसकी अपनी कमजोरी है। उन्हें समझना चाहिए, पूछना चाहिए। अगर सरकार की तरफ से कोई कमी रह गयी है तो उस कमी को हम पूरा करेंगे। हम उन्हें फिर से समझायेंगे, बतायेंगे और ट्रेनिंग देंगे। लेकिन आज जब हम यह देख रहे हैं कि हर राज्य से उस बीज की पुकार आ रही है, उस बीज की मांग बढ़ रही है तो यह कहना कि उससे सबको नुकसान हो रहा है, यह एक तरफा और गलत बात है।

मैं यह मानता हूं कि कहीं कोई नुकसान ऐसा हुआ है जिसमें कम्पनी की कोई गलती है तो कन्ज्यूमर्स कोर्ट खुला हुआ है, आप वहां जाइये। सरकार भी किसानों की मदद करेगी। इसमें हमें कोई आपत्ति नहीं है लेकिन नकली बीज बेचने वाली कम्पनियों से भी हमें सावधान रहना पड़ेगा। जब भी अच्छी चीज बाजार में आती है तब

हमेशा उसकी नकल भी पैदा होती है। जैसे ही आपकी शिकायत हमें प्राप्त हुई कि इस राज्य में क्या हो रहा है, तो हमने अकेले गुजरात में ही पांच ऐसी कम्पनियों को पकड़ा है। इसके अलावा अन्य राज्यों में भी हैं। हमने अपने विभाग को ताकीद की है कि वे इन नकली कम्पनियों को पकड़े और उन्हें सजा दें। हम इसकी पूरी कोशिश करेंगे कि इसकी नकल न होने पाये। लेकिन खेती के मामले में किसानों को भी गुजरात सरकार के एक्सटेंशन विभागों को, विश्वविद्यालयों के विभागों को, स्वयं कम्पनी को अधिक ट्रेनिंग देने की आवश्यकता है। हम मानते हैं कि इस ट्रेनिंग में सरकार पूरी मदद करेगी। लेकिन यह कहना कि सरकार की वजह से उनको कोई नुकसान हुआ है, तो यह ज्यादती होगी। â€¦ (व्यवधान)अगर पूरे इंस्ट्रक्शन्स फालो नहीं किये जायेंगे तो खेती में कमी रह सकती है। इसकी भी हम जांच कर लेंगे। अगर कम्पनी की तरफ से कोई गलती हुई है तो उसमें हम कम्पनी को भी जरूर सजा देंगे। लेकिन अभी तक ऐसी कोई रिपोर्ट हमारे पास नहीं है। हम तो यह देख रहे हैं कि बीटी कॉटन के बीज की सेल बढ़ रही है और क्षेत्रफल बढ़ रहा है ।अगर उसमें नुकसान होगा तो किसानों का क्षेत्रफल नहीं बढ़ेगा। यह इस बात का सबूत है कि बीटी काटन की मांग देश में बढ़ी हुई है।â€¦ (व्यवधान)

SHRI MADHUSUDAN MISTRY : Mr. Speaker, Sir, the hon. Minister has not answered my question about GEAC. ...(*Interruptions*) I want your protection. He is simply evading the question. ...(*Interruptions*) यह कम्पनी ने वॉयलेट किया है।â€¦ (व्यवधान)

**अध्यक्ष महोदय :** मैं मंत्री जी को यह नहीं कह सकता कि आपको जो चाहिए, मंत्री जी वह उत्तर दें। आप जानते हैं कि मैं ऐसा कैसे कह सकता हूं। आप दूसरे किसी डिवाइस के द्वारा अपना प्रश्न प्रस्तुत कर सकते हैं।

...(*Interruptions*)

MR. SPEAKER: You can raise your question under some other device.

...(*Interruptions*)

**अध्यक्ष महोदय :** मंत्री जी ने कहा है कि इस विाय पर जांच करने को तैयार हैं। इस विाय पर और भी जांच करेंगे। Your purpose is served

....(*Interruptions*)